19 / 12 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

खुदाई खिदमतगार बन

सहज याद में रहने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा भृकुटी के बीच मस्तक सिंहासन पर विराजमान हूं.....

➳ _ ➳ इस शरीर द्वारा कर्म कर रही हूं.... कर्म करा रही हूं.....

➳ _ ➳ मैं स्वयं के कार्यों को चेक कर रही हूं...

→ मैं क्या कर रही हूं

→ मैं क्यों कर रही हूं

→ मुझे स्मृति आयी कि....

- मैं खुदा की खिदमत में रहने वाली खुदाई खिदमतगार हूं।
- मैं बाप की सहयोगी हूं
- करावनहार बाप का दिया हर कार्य करने के लिए तत्पर

➳ _ ➳ जिसने मुझे निमित्त बनाया... जिसका यह कार्य है.... क्या मैं उसे भूल सकती हूं.....

→ हर कर्म ख़ुदा की यानी बाप की डायरेक्शन पर कर रही हूँ...

→ हर सांस भी उसकी डायरेक्शन पर....

→ हर कार्य उसका

→ हर कार्य करते स्मृति उसकी

→ मैं इस जीवन के हर पल में

- बाबा को याद करते हुए
- स्वयं को खुदाई खिदमतगार की सीट पर सेट करते हुए
- सहज योगी जीवन जीने का अनुभव करती हूं

➢➢ संगम युग में पत्ते पत्ते को भगवान हिलाता है इसका अनुभव

➳ _ ➳ मैं आत्मा कल्पवृक्ष का पहला पत्ता हूं

➳ _ ➳ मैं संगमयुगी golden एजेड पत्ता हूँ

➳ _ ➳ मैं चैतन्य पत्ता हूं जिसको डायरेक्ट भगवान चला रहा है

➳ _ ➳ मैंने वायदा किया है बाबा से भगवान से

→ जैसे चलाएंगे वैसे चलेंगे

→ जहां बिठाएंगे वहां बैठेंगे

- और मैंने अपनी बुद्धि को बाबा के पास बैठा दिया है
- मेरा हर संकल्प भी बाबा चला रहा है
- मेरा हर बोल बाप समान हो गया है

- मेरा हर कर्म भी बाप समान हो रहा है
- मेरा कहना और करना एक समान है

➳ _ ➳ बाबा ने गारंटी ले ली है

→ मेरा हर बोझ ले लिया है

- मेरे ऊपर कोई बोझ नहीं
- मैं आत्मा संपूर्ण रूप से हल्की हो चुकी हूं
- अपना हर बोझ बाप को सौंप हर मेहनत से मुक्त हो चुकी हूं

➳ _ ➳ मैं कल्पवृक्ष का पहला पत्ता

➳ _ ➳ मैं रियल गोल्ड प्योर आत्मा

➳ _ ➳ मैं खुदाई खिदमतगार आत्मा

→ हल्का बिल्कुल हल्का महसूस कर रही हूं

→ उड़ रही हूं

→ बाबा से सहज योग करते हुए

- विश्वकल्याण का कर्तव्य कर रही हूं